The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, October 2022
www.theresearchdialogue.com

"भारतीय युवा और सोशल नेटवर्किंग साइट्स"

किरन

शोध छात्रा

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

सारांश :

वर्तमान सरकार डिजिटल अभियान चला रही है। जिससे एक नई क्रान्ति उभर कर सामने आ रही है–सोशल मीडिया क्रान्ति भारत विश्व में सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश है। प्रस्तुत लेख में बताया गया है कि किस तरह भारतीय युवा सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर वेब आधारित गतिशील मंच पर अपने संवाद रखते हैं? यदि युवा इन साइट्स का उपयोग सकारात्मक ढंग से करें तो यह युवाओं में ज्ञान की वृद्धि के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है।

प्रस्तावना :

युवाओं को देश का वर्तमान और भविष्य कहा जाता है। युवा किसी देश की रीढ़ होती है। देश के निर्माण में इस वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सामान्यतः 15 से 40 आयुवर्ग के लोगों को युवा वर्ग में रखा जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति विद्या अध्ययन एवं भविष्य में स्वयं को स्थापित करने की योजना बना रहा होता है। 15 से 28 वर्ष के बीच मुख्यतः विद्यार्थी जीवन होता है और 28 से 40

वर्ष के मध्य वह स्वयं को नौकरी या व्यवसाय में रहकर स्थापित कर चुका होता है, जो कहीं न कहीं स्वयं के लिए समाज के लिए और देश के विकास में सहायक होता है। युवा एक राष्ट्र का आधार होता है। देश का मान सम्मान, प्रतिष्ठा और गौरव इन्हीं पर आधारित होता है। किसी राष्ट्र की उन्नति और अवनति भी इन्हीं पर होती है। युवा सुसभ्य एवं अनुशासित होते हैं। युवा किसी भी देश के लिए अथवा समाज के लिये प्रेरणा के स्त्रोत होते हैं।

सौभाग्य से भारत को वर्तमान में सबसे अधिक युवा आबादी वाला देश कहा जा रहा है। जनगणना (2011) के आकंड़ों के अनुसार भारत में 25 साल से अधिक आयु की आबादी 50% और 35 साल से कम आयु की आबादी 65% है। संयुक्त राष्ट्र की वर्ष 2014 की रिपोर्ट के मुताबिक भारत सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है। इस मामले में भारत ने सबसे बड़ी आबादी वाले देश चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स संचार का एक नया माध्यम है और चूंकि भारत एक युवा देश है इस लिहाज से इस नए माध्यम के प्रति स्वीकार्यता भी अधिक होनी चाहिए। और तथ्य भी बताते हैं कि 2017 के सोशल नेटवर्किंग साइट्स के आंकड़ों के अनुसार सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के मामले में 19 करोड़ 60 लाख 20 हजार उपयोगकर्ताओं के साथ भारत का स्थान चीन के बाद दूसरा है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं को जोड़ने का माध्यम बन गयी है। युवा वर्ग के लोगों में SNS के प्रति रूचि लगातार बढ़ती जा रही है। जिसके कारण आज सोशल नेटवर्किंग दुनिया भर में इंटरनेट पर होने वाली एक मुख्य गतिविधि बन गयी है। यह साइट्स परस्पर संवाद का वेब आधारित गतिशील मंच है। इसके माध्यम से लोग संवाद करते हैं। आपसी जानकारियों का आदान–प्रदान करते हैं। इन युवाओं की जिंदगी का यह एक अहम अंग बन गया है। इसके माध्यम से लोग बिना किसी रोक–टोक के देश और दुनिया के हर कोने तक पहुँचा रहे हैं। युवाओं के जीवन में सोशल नेटवर्किंग साइट्स से क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। इंटरनेट एण्ड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा सन् 2015 में जारी आकंड़ों की माने तो भारत के शहरी इलाकों में प्रत्येक 4 में से 3 व्यक्ति सोशल

नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग किसी न किसी रूप में करते हैं। इस रिपोर्ट में 35 प्रमुख शहरों के आंकड़ों के आधार पर यह भी बताया है कि 77% उपयोगकर्ता SNS का उपयोग मोबाइल से करते हैं। सोशल मीडिया तक पहुँच कायम करने में मोबाइल का बहुत बड़ा योगदान है और इसमें भी युवाओं की भूमिका प्रमुख है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में सोशल मीडिया पर प्रतिदिन लगभग 4–5 घण्टे का समय लोगों द्वारा व्यतीत किया जाता है। इनमें अधिकतम कालेज जाने वाले विद्यार्थी है।

देश के औद्योगिक संगठन एसोचैम की वर्ष 2017 की रिपोर्ट के अनुसार सोशल नेटवर्किंग साइट्स के कारण युवाओं की पढ़ने और देखने की आदत में तेजी से बदलाव आ रहा है। युवा पीढ़ी में यह बदलाव फेसबुक, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम सहित कई सोशल प्लेटफार्म की वजह से हुआ है। एसोचैम द्वारा दिल्ली, मुबंई, चेन्नई, हैदराबाद, पुणे, बेंगलूरू में 235 परिवारों पर सर्वेक्षण किया है। सर्वेक्षण के अनुसार करीब 80 फीसदी 600 प्रतिभागियों ने कहा कि सुबह की चाय के साथ अखबार पढ़ने में भारी बदलाव हुआ है। जहाँ 50 साल से अधिक उम्र के पुरूष अब भी अखबार पढ़ते हैं वहीं परिवार के युवा सदस्य विभिन्न सोशल साइटों पर जुटें रहते हैं। जहाँ उनकी रूचि से सम्बन्धित जानकारियों और खबरों का अथाह भण्डार है। सर्वे के अनुसार परिवारों में अखबार पढ़ने के वक्त में तेजी से कमी आई है और लोग फेसबुक पर ज्यादा वक्त बिता रहे हैं। खासतौर से युवा पीढ़ी में यह चलन तेजी से उभरा है। भारत में फेसबुक के लगभग 20 करोड़ यूजर्स हैं और पूरी दुनिया 700 में फेसबुक के 2 अरब यूजर्स है अर्थात भारत में पूरे विश्व का 10% हिस्सा फेसबुक उपयोगकर्ताओं का है।

सरकार डिजिटल अभियान चला रही है। इससे सोशल मीडिया का विस्तार होगा तथा लोगों का खबरों, विचारों तक पहुँचने का जायका बदलेगा। इन्टरनेट प्लेटफार्म की पहुँच को देखते हुए ज्यादातर अखबार डिजिटल हो चुके हैं। एसोचैम के महासचिव डी.एस.रावत ने कहा है कि विडम्बना यह है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर ढेरों फर्जी खबरें और झूठ भी बड़े पैमाने पर प्रसारित हो

रहा है। जैसे–जैसे नई मीडिया– परिपक्वता की तरफ विकसित होगी, उम्मीद है कि यूजर्स भी इंटरनेट से जानकारी हासिल करने के मामले में ज्यादा समझदार बनेगें।

अतः सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग और प्रसार सम्बन्धी आँकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में लोगों द्वारा विशेषकर युवा पीढ़ी में इसका प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के कई लाभ हैं तो कई हानियां भी है। लाभ की बात करें तो सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से लोग नए मित्र बना सकते हैं, अकेलेपन के शिकार होने से बचते हैं, खुद को बेहतर तरीके से विश्वमंच पर अभिव्यक्त कर सकते हैं। व्यापार–व्यवसाय को बढ़ाने के लिए इसके माध्यम से विज्ञापन को बहुत ही कम खर्चें पर लक्षित उपभोक्ता वर्ग तक पहुँचा सकते हैं। वहीं सोशल नेटवर्किंग के कई नुकसान भी उभरकर सामने आए हैं। इनके अत्यधिक उपयोग से लत लगने के दुष्परिणाम सामने आए हैं जिसके कारण व्यक्तियों की कार्य दक्षता पर विपरीत असर पड़ता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अत्यधिक समय बिताने से यह जिन्दगी का अहम हिस्सा बन जाती है। युवा कई बार इनको इतनी ज्यादा अहमियत देने लगते हैं कि वह अपने जीवन की महत्वपूर्ण चीजों के प्रति मूल से कट जाते हैं जो कि युवाओं के लिए सही नहीं है। कई बार असामाजिक तत्व सोशल नेटवर्किंग साइट्स से लोगों का डाटा और फोटो चोरी कर लेते हैं। जिनका उपयोग वह गलत कामों के लिए करते हैं। इन मामलों में अधिकांशतः युवतियाँ शिकार हो रही है। वास्तव में सोशल नेटवर्किंग साइट्स वह सामाजिक मीडिया है जो समाज का, समाज के लिए, समाज द्वारा संचालित माध्यम है। यह एक उन्नत तकनीक है जिसने हर आम–खास को अभिव्यक्ति और सम्पर्क का एक लोकतान्त्रिक और आसान माध्यम उपलब्ध करवाया है। समाज जितना परिपक्व होगा उसके अनुरूप ही इनका सकारात्मक उपयोग होगा। यदि भारतीय संस्कृति में युवा और विद्यार्थियों के सन्दर्भ में दिए गए दिशा निर्देशों के अनुरूप सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग विद्या अध्ययन के लिए सकारात्मक रूप से करें तो यह युवाओं के ज्ञान में वृद्धि के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकती है।

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, *October* 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-Oct-2022/09

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

किरन

For publication of research paper title

"भारतीय युवा और सोशल नेटवर्किंग साइट्स"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-03, Month October, Year- 2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com